एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 05 (नवम्बर-दिसम्बर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

# ज़ीरो बजट खेती विशेष: देशी जीवामृत बनाने के फायदे एवं प्रयोग करने की विधि

(*धर्मेंद्र कुमार[1], डॉ. हेमराज मीना[2] एवं हीरा लाल शर्मा[1])
[1]शोधार्थी एवं [2]सहायक प्राध्यापक, संगम विश्वविध्यालय, भीलवाड़ा (राजस्थान)
* hemumeena92@gmail.com

फसल उत्पादन में अंधाधुन रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के भारी मात्रा में प्रयोग होने के कारण आज हमारी भूमि की उर्वरता दिनोंदिन कम होती जा रही है फलस्वरूप उत्पादन लेने के लिए और अधिक मात्रा में रसायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग करना पड़ता है जिस कारण से खेती की लागत तो बढ़ती ही है साथ ही साथ भूमि की उर्वरता कम होती है तथा प्राकृतिक संतुलन भी बिगड़ता है जिससे हमारा पर्यावरण दिनोंदिन प्रदूषित होता जा रहा है जिसका सीधा प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है। अत: पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए एवं आने वाली पीढ़ी के लिए प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखने के लिए आज जैविक खेती को अपनाना बहुत ही आवश्यक हो गया है, भूमि की उर्वरता को बढ़ाने के लिए कुछ जैविक विधियाँ जैसे कि जीवामृत, बीजामृत, पंचगव्य, दशगव्य आदि का प्रयोग बहुत ही लाभदायक माना गया है, जिनमे से एक "जीवामृत" बनाने एवं प्रयोग करने कि विधि के बारे मे इस लेख मे बताया जा रहा है।

## जीवामृत क्या है?

जीवमृत दो शब्दों "जीवन + अमृत" से मिलकर बना है अर्थात जीवन के लिए अमृत। जीवामृत सूक्ष्म जीवों का घोल होता हैं, जो की मृदा मे लाभदायक जीवाणुओ की संख्या बढ़ाता हैं एवं पोधों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता हैं।

## जीवामृत के लाभ

जीवामृत में मौजूद सूक्ष्मजीव मिट्टी में उपस्थित अनुपलब्ध पोषक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलते हैं जिससे फसल इन पोषक तत्वों को आसानी से ग्रहण कर पाते हैं। जीवामृत के प्रयोग से पौधों को सभी पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं साथ ही साथ मिट्टी के संरचना में भी सुधार होता है तथा इसमें सूक्ष्मजीवों की संख्या के साथ-साथ केंचुओ की संख्या में भी वृद्धि होती है जिससे मिट्टी में जल और वायु का संचार अच्छा होता है, फसलों एवं फलदार पौधो की जड़ों का विकास अच्छा होता है जिससे पौधे की वृद्धि एवं उत्पादन दोनों में सुधार होता है।

## जीवामृत बनाने के लिए आवश्यक सामग्री:

- देसी गाय का गोबर 10 किलो
- गोमूत्र 10 लीटर

- पीपल या बरगद के जड़ के पास की मिट्टी 1 किलो
- किसी भी दाल का आटा 2 किलो
- गुड 2 किलो
- पानी 200 लीटर

**बनाने की विधि**

जीवामृत बनाने के लिए किसी बर्तन में 10 लीटर तक पानी लेकर उसमें ऊपर बताई गई सभी सामग्रियों को अच्छे से घोलते हैं उसके बाद 200 लीटर बर्तन में इस सामग्री को डालकर उसमे 190 लीटर पानी और मिला देते हैं , उसके पश्चात किसी जालीदार कपड़े से इस मिश्रण को ढककर किसी छायादार स्थान पर रख देते हैं , प्रतिदिन सुबह-शाम मिश्रण को किसी लकड़ी के डंडे की मदद से उसको अच्छी प्रकार से घड़ी की सुई अनुसार उसको पाँच से दस मिनट तक घुमाते हैं, लगभग एक सप्ताह बाद जीवामृत बनकर तैयार हो जाता हैं।

**सावधानियां**

- जीवामृत बनाने के लिए किसी धातु के बर्तन का प्रयोग नहीं करना चाहिए, इसके लिए प्लास्टिक के पात्र का उपयोग करें।
- जीवामृत बनाने की जगह छायादार होनी चाहिए वहां सीधी धूप नहीं पड़नी चाहिए।
- जीवामृत बनाने के लिए देसी गाय के गोबर और गोमूत्र का ही प्रयोग करना चाहिए।
- जीवामृत में प्रयोग होने वाली मिट्टी पीपल या बरगद के पास की अथवा जंगल की होनी चाहिए इनमें जीवों की संख्या अधिक मात्रा में होती है।

**प्रयोग करने की विधि एवं समय**

- जीवामृत को सभी प्रकार की फसलों (अनाज, दलहनी, तिलहनी), फलदार वृक्षो, सब्जियों, बागानों इत्यादि में प्रयोग किया जा सकता हैं।
- जीवामृत को खेत की तैयारी के समय सिंचाई के समय अथवा खड़ी फसल में भी इसका प्रयोग कर सकते हैं।
- 200 लीटर जीवामृत 1 एकड़ के लिए पर्याप्त होगा।
- जीवामृत एक फसल के जीवन काल में तीन से पांच बार प्रयोग करने से फसलों में रासायनिक खाद डालने की आवश्यकता नहीं होगी।